सहरिया जनजाति उत्पत्ति एवं विकास-

सहरिया जनजाति भारत की प्राचीनतम जनजातियों में से एक है। उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिला, ग्वालियर, चम्बल सम्भाग में सहरिया जनजाति बड़ी संख्या में मिलती है। सहरिया जनजाति से सम्बन्धित उल्लेख भारतीय संस्कृत भाषा के प्राचीन साहित्यों में ८०० ई० पूर्व से ही मिलने लगते हैं। इसके साथ ही १२०० ई० तक लिखे गये संस्कृत भाषा के साहित्य में सहरियाओं का उल्लेख ''सवर'' के रुप में मिलता है। सम्भवतः लगातार विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए ''सवर'' से सहरिया हो गया होगा।

रसेल एवं हीरालाल के अध्ययन में सहरा, सवर, जौरिया, खूँटिया का उल्लेख मिलता है। समाजशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों का मत है कि रसेल और हीरालाल द्वारा वर्णित उक्त नामोउल्लेख सहरिया जनजाति की उपशाखायें हैं। समाजशास्त्रियों का मानना है कि गार्डन चाइल्ड द्वारा वर्णित सवर जनजाति सहरिया जनजाति ही थी और इस प्रकार सहरिया जनजाति की व्याख्या ऐतिहासिक दृष्टि से प्रागैतिहासिक काल तक की जाती है।

डा० गिडुगुवेंकट का अनुसंधान यह प्रमाणित करता है कि सहरिया जनजाति अथर्ववेद से पूर्व की है और ऐतिहासिक दृष्टि से अथर्ववेद का काल लगभग ८०० ई० पूर्व माना जाता है।

बौद्धकाल में भी सहरियों के बारे में सूचनायें मिलती हैं। बौद्धग्रन्थ ''सेहरा'' जनजाति का उल्लेख करते हैं। समाज वैज्ञानिक इसकी पुष्टि इस तथ्य से भी करते हैं कि बौद्धकाल में चम्बल और यमुना नदी के मध्य का मैदानी भाग सेहरा के नाम से जाना जाता था। सहरिया जनजाति का उल्लेख फारसी ग्रन्थों में भी हुआ है। अबुल फजल ने ''आइना-ए-अकबरी'' में सहरिया जनजाति का उल्लेख हुआ है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सहरिया जनजाति अत्यन्त प्राचीन थी। यह भारत की मूल निवासी थी तथा भारत की आदितम् मानव जाति का प्रतिनिधित्व करती थी। मध्यकालीन ग्रन्थों में लगातार सहरियाओं का उल्लेख प्रमाणित करता है कि सहरिया लगातार अपने अस्तित्व को बनाये रखने में सफल रहे थे और आज भी जंगलों के आस-पास के गांवों और कस्बों में अपना अस्तित्व कायम किये हुए है।२

सहरिया

नामावली: सहरिया के अन्य नाम भी हैं, रावत, बरमावार, बन रखा या सोरोरेन।

मुख्य क्षेत्र: उत्तर प्रदेश के झांसी और ललितपुर के कुछ क्षेत्रों में तथा मिर्जापुर से विभक्त जिला सोनभद्र।

जनसंख्या: १,८६२,५५९ (२०११ की जनगणना)

भाषा: बुन्देलखण्डी (भारतीय आर्य भाषा समूह)

सामाजिक संगठन: विभिन्न गोत्र, सन्नौरिया, रजौरिया, लोठी, सोलंकी, भगोलिया, कथेरिया आदि। प्रत्येक गोत्र परिवार (कुटुम्ब) में बंटा होता है।

आर्थिकी: लघु वन उत्पाद, कृषक, अधिकांश कृषक मजूदर।

धर्म: हिन्दू जातियों जैसा ब्राहमण, धोबी, चमार, लोहार आदि समूहों से सम्पर्क रखते हैं। भंगी के साथ सम्पर्क वर्जित।

अन्य: उत्तर प्रदेश के सहरिया पर जनक्यिान्त अनुपलब्ध है १९७१ में एम०के० बेनर्जी ने झांसी के सहरिया पर मानवमिति सम्बन्धी एक अध्ययन किया था, शिक्षादर: (१९८१) तथा उत्तर प्रदेश से मिर्जापुर जिले के सोनभद्र जिले में प्रवासी हैं।

''सहरिया'' का अर्थ ''बाध का साथी'' से है। ये वर्षों से जंगलों में रहते हुए जंगली जानवरों के सहचर हुए हैं। ये आज भी रास्ते के लिए पक्की सड़कों का इस्तेमाल करते हैं तथा झुण्ड में ही दिखाई देते हैं। सहरिया जनजाति-सामाजिक दृष्टि से पिछड़ी हुई है। सहरिया मूलतः एक ऐसी जनजाति है जो जंगलों पर निर्भर है। जंगलों के विनाश के कारण सहरिया जनजाति अपने मूल निवास से दूर होती जा रही हैं आर्थिक विपन्नता के कारण ये मजदूरी करने का मजबूर हैं। इन्हें मजदूरी के अलावा कोई दूसरा काम भी नहीं आता है। सहरिया जनजाति अपने आप में सामाजिक परिवर्तन चाहती है क्योंकि जंगलों के कम होने से इनकी जंगलों पर निर्भरता लगभग समाप्त हो गई है।

मध्य प्रदेश शासन द्वारा १९८१ की जनगणना में जिन ४६ जनजातियों को अनुसूचित मान्य किया गया है उसमें सहरिया भी सम्मिलित हैं। यह ग्वालियर, चम्बल सम्भाग की प्रमुख जनजाति है जो कि सम्पूर्ण जनजाति का ८४.६५ः है। इस जनजाति के उपभेद भी हैं, जिन्हें सहरिया, सेहरिया, शोसिया और सौर के नाम से जाना जाता है।

सहरिया जनजाति की विशेषतायें-

१. सामान्य भाषा
२. एक नाम
३. निश्चित भू-भाग
४. सामान्य संस्कृति
५. परिवारों का समूह
६. नातेदारी का महत्व

७. अन्तर्विवाही समूह

८. राजनैतिक संगठन

९. आर्थिक आत्मनिर्भरता

१०. सामान्य निषेध

११. बाल-विवाह

सहरिया जनजाति के विशिष्ट सांस्कृतिक प्रतिमानः-

अति मानवीय प्रकार की जीवात्मा की सत्ता में विश्वास का प्रचलन पूरे विश्व में पाया जाता है। भारतीय समाज एक लम्बे समय से विभिन्न संस्कृतियों तथा प्रजातीय समूहों का संगम स्थल रहा है। समय-समय पर भारत में विभिन्न समूहों ने प्रवेश किया, लेकिन कालान्तर में ऐसे सभी समूह भारतीय समाज का अभिन्न अंग बन गये, इसके पश्चात् भी अनेक मानव समूह ऐसे थे जिन्होंने अन्य समूहों की कुछ सांस्कृतिक विशेषताओं को ग्रहण करने के बाद भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं को नष्ट नहीं होने दिया। साधारणतया ऐसे समूहों को हम ''जनजाति'' ''आदियजाति'' ''वन्यजाति'' के नाम से सम्बोधित करते हैं।

जीववाद पर आस्था धार्मिक विश्वासों और जीवात्माओं में विश्वास करने वाली जनजातियों के साथ एक सामान्य बात है। जनजातियों के धर्म में जीववाद में विश्वास एक सार्वजनिक विशेषता है। उन लोगों के लिए सभी स्थान धार्मिक हैं क्योंकि वे स्थान जीवात्माओं के स्थान हैं, जैसे-जानवरों, पौधों, वृक्षों, तालाबों, नदियों, पत्थर, पहाड़ सब में जीव का निवास स्थान है। सम्पूर्ण वातावरण चाहे गांव हो या वन जहाँ जनजाति के लोग निवास करते हैं, जीवात्माओं से भरा होता है। देवियों को नींबू और नीम के पेड़ में वास करने वाला झूला झूलने की बात सोनभद्र जिले के गांव वासियों में भी दिखती है। जनजातियों का विश्वास है कि जीवात्माएँ एक पशु या पेड़ आदि के रुप में सभी जगह मौजूद हैं। यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो उनके कारण परिवार में बीमारी, मृत्यु, फसल का असफल होना, दुर्घटना या अन्य विपत्ति आती है। इस तरह के देवता सम्पूर्ण जनजातिय भारत में पाये जाते हैं।

सोनभद्र की सहरिया जनजाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उसकी सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक गतिविधियों एवं उसके लोक गीतों, लोक नृत्यों, नाट्यों, लोक कला तथा स्थानीय मेलों, हाटों, त्योहारों, समारोहों आदि का सम्मिश्रण है। वस्तुतः इनकी संस्कृति सहरिया जनजाति की सामाजिक चेतना, आध्यात्मिक आदर्शों एवं परम्पराओं की अभिव्यक्ति में समाहित है। सोनभद्र की सहरिया जनजाति का समाज धर्म, संस्कार, कला आदि उसकी संस्कृति है जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती है।

सामान्यतः सहरिया किसी गांव या शहर के आस-पास पृथक समूह बनाकर रहना पसन्द करते हैं। जंगलों में ऊँची पहाड़ियों की बजाय समतल मैदानी भागों में परम्परागत रुप से समूहों के मकान बनाकर रहते है। कभी-कभी ये पहाड़ों पर भी मकान बना लेते हैं। मकानों के बसाहट ३ ओर से अंग्रेजी के उल्टे यू (?) आकार में होती है। एक ओर से आने-जाने का रास्ता होता है। बीच में चोंक होता है, जिसमें बंगला यानी अतिथि घर होता है। इनके गांव की बसाहट का कोई निश्चित आकार-प्रकार नहीं होता है। बसाहट को ही सहराना कहा जाता है। सहराना के बीच एक बड़ा मकान होता है। इसे बंगला कहा जाता है।३

सहरिया जनजाति की सामाजिक स्थिति का अध्ययनः-

सहरियाओं के ग्राम ''सहराना'' कहलाते हैं। इन सहरियाओं का जनजीवन विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था के आधार पर चलता है। इनका एक विशिष्ट सामाजिक ढांचा होता है जिसका पालन उसके सभी परिवार एवं सदस्य करते हैं। सहरियाओं की सामाजिक व्यवस्था में ६ व्यक्तियों का बड़ा महत्व होता है, ६ व्यक्ति हैं-परिवार का मुखिया, पटेल, प्रधान, बराई, भोपा, हथनरिया। ये सभी पुरुष होते हैं और इनका महत्वपूर्ण स्थान होता है। अतः सहरिया, सामाजिक व्यवस्था को ''पुरुष प्रधान समाज'' कहा जाये तो अनुचित नहीं होगा।४

परिवार का मुखियाः-

मुखिया परिवार का प्रमुख और सबसे बड़ा पुरुष होता है। परिवार का मुखिया अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिम्मेदार होता है। ग्राम से बाहर आने-जाने तथा आवश्यक वस्तुओं को लाने का कार्य मुख्यतः परिवार के मुखिया के जिम्मे ही रहता है।

सहरिया में सामाजिक व्यवस्था को सुचारु रुप से चलाने के लिए परिवार को निम्न भागों में बांट दिया जाता है जो निम्न प्रकार है-

१. पटेल - पटेल का पद सहरिया समाज में परम्परागत होता है अर्थात् पटेल का पद वंशानुगत होता है और निश्चित रुप से सहाराना का सबसे प्रतिष्ठित और शक्तिशाली परिवार का व्यक्ति ही पटेल पद को सुशोभित करता है।

२. प्रधान -प्रधान सहराना का दूसरा प्रमुख व्यक्ति होता है। प्रधान एक प्रकार से सहराना का सबसे प्रमुख व्यक्ति होता है, सम्भवतः इसी कारण इसे प्रधान कहते हैं। प्रधान सहरिया समाज का आवश्यक अंग होता है।

३. बराई - बराइ सहरियाओं के आवश्यक सूचनाओं को प्रेषित करने का कार्य करता है। बराई सहराना में ''डोंडी'' बजाकर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और सूचनाएँ जोर-जारे से बोलकर देता है।

४ भोपा - भोपा सेन्ट्रिजालिक क्रियाओं का ज्ञाता होता है और सहरानावासियों के दिलों दिमाग पर गहरा असर दिखता है। भोपा देवी-देवताओं का जानकार व्यक्ति होता है।

५. हथनरिया - हथनरिया व्यक्ति की हाथ की नाड़ी पकड़कर सम्बन्धित बीमारी का पता लगा लेता है और उससे सम्बन्धित चिकित्सकीय औषधियाँ देता है।

६. कोटवार - कोटवार सहराना के सुरक्षा तन्त्र से जुड़ा महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है, यह सहराना की सभी सूचनायें रखता है। कोटवार सहराना में होने वलो आपराधिक गतिविधियों पर भी नजर रखता है।

परिवार एक सार्वभौमिक संस्था है, जो सश्य और असश्य समाजों में समान अप से पाया जाता है। परिवार संस्था हर युग और काल में किसी न किसी अप में विद्यमान रही है। इस प्रकार परिवारों का समूह मिलकर ''सहरान'' का निर्माण करता है। सहरिया जनजाति के परिवार का प्रमुख सबसे बड़ा पुरुष होता है इस प्रकार ये परिवार ''पितृ सत्तात्मक'' होते हैं। परिवार दो प्रकार के होते हैं-

१. एकल परिवार २. संयुक्त परिवार

१. **एकल परिवारः-** एकल परिवारों में एक विवाहित पति-पत्नी और उसके अविवाहित बच्चे ही रहते है। इनकी संख्या संयुक्त परिवारों की अपेक्षा अधिक है। एकल परिवारों में परिवारों के सदस्यों को संयुक्त परिवारों की अपेक्षा मानसिक संतुष्टि एवं सुख अधिक मिलता है।

२. **संयुक्त परिवारः-** सहरिया समाज में लोग समूह में रहना पसन्द करते हैं। संयुक्त परिवारों में पति-पत्नी उनके बच्चे, पति के पिता-माता, चाचा-चाची, भाई-बहन रहते हैं।

विवाहः-

सहरियाओं में विवाह माता-पिता की सहमति से एवं लड़का-लड़की की रजामन्दी दोनों प्रकार से होता है। लड़की के लिए रिश्तेदारों व जान-पहचान वालों के यहाँ वह ढूँढा जाता है। सहरिया समाज में बाल विवाह का प्रचलन है।५ सहरिया समाज में विवाह के अनेक रुप प्रचलित हैं

एकल विवाह, बहुविवाह, अपहरण, विवाह एवं विधवा विवाह एवं विवाह का प्रमुख उद्देश्य सम्भोग द्वारा यौन सुख संतृप्ति एवं सन्तानोत्पत्ति है। सहरिया जनजाति के समुदाय में भी धार्मिक संस्कार

अन्य जनजातियों के लगभग समान ही है। विवाह, गर्भधारण, धार्मिक त्योहारों के समय सहरिया लोग विभिन्न संस्कारों का पालन करते हैं। सहरिया जनजाति पर राजस्थान का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। सहरिया हिन्दुओं की तरह राम, कृष्ण, हनुमान, राधा, लक्ष्मी, दुर्गा आदि देवी-देवताओं की पूजा करते हैं, साथ ही अनेक स्थानीय देवी-देवताओं जैसे हीरामन बाहर, भौरों देव, तैजाजी महाराज, हीरा भूमिया देव, ठाकुर बाबा, बीरासन माता व काली माता आदि की पूजा करते हैं।

जब व्यक्ति पर कोई विपदा आती है तो यह समझा जाता है कि इसके पीछे कोई बुरे लोगों के अपकृत हैं। आमतौर पर इस प्रकार की विनाशकारी शक्तियों के लिये देवी-देवताओं को नहीं शैतान को उत्तरदायी माना जाता है।

धार्मिक संस्कार:-

विवाह, गर्भधारण, धार्मिक त्यौहारों के समय सहरिया लोग विभिन्न संस्कारों का पालन करते हैं। गर्भधारण के पश्चात् सहरिया महिलाओं को कई निषेधों का पालन करना पड़ता है। जैसे शमशान भूमि में नहीं जाना, अकेली कुँआ नदी, बाबड़ी नाले नहीं जाना, ग्रहण नहीं देखना आदि। शिशु जन्म के दसवें दिन गृहस्वामी शिशु के मुण्डन व नामकरण संस्कार के लिये अपने परिजनों को तेल चावल भेजकर न्यौता देते हैं।

बोली एवं कहावतें:-

बोली और कहावतें किसी भी जाति को सांस्कृतिक पहचान देती है। जिस प्रकार सात कोस में पानी का स्वाद बदल जाता है उसी प्रकार बोली भी बदल जाती है। सहरियाओं के लिये एक कहावत बड़ी प्रसिद्ध है-''फटने में खेर, भागने में शेर''।। अर्थात् किसी काम से जी चुराकर शेर की गति से भागने में सहरिया का कोई जवाब नहीं है। छेरी की पीठ सदा उधारी, गरीबी से घीरे रहना। तीन त्रिलोक से देखना, संकट में फस जाना। इस प्रकार सहरियाओं की न तो कोई निज बोली है, और न ही भाषा, कहावतों में भी वे भीरु ही नजर आते है।

वेशभूषा एवं आभूषण:-

साधारण स्त्रियों का पहनावा साधारण होता है। औरतें सिर ढंकने के लिए दुपट्टे का उपयोग करती है व तन ढंकने के लिए (ब्लाउज) अंगियां व घाघरा का प्रयोग करती हैं। सहरिया स्त्री-पुरुष साफ-सफाई का ध्यान न रखकर गन्दे व मैले कपड़े पहने रहते हैं। सहरिया पुरुष मुख्य रुप से धोती कुर्ता, कमीज व बनियान का प्रयोग करते है। पैर में रबर प्लास्टिक के जूते, चप्पल ही पहनते हैं।

आमोद-प्रमोद के साधनः-

सहरिया जनजाति में मनोरंजन के लए दुलदुल घोड़ी, लहंगी एवं राई आदि लोकनृत्य एवं नौटंकी, नाटक, लोक नाट्य आदि प्रचलित है। शोध क्षेत्र में अधिकतम् सहरिया मनोरंजन के प्रमुख साधन टी०वी०, डी०वी०डी०, एफ०एम० आदि का प्रयोग करते हैं।

खान-पान एवं भोजनः-

मछलियों का शिकार तथा पक्षियों का भी शिकार पसन्द करते हैं। वनों में पाये जाने वाले कन्द मूल फल, हरी सब्जियाँ इनके भोजन का मुख्य अंग है। वनस्पतियों एवं जड़ी बूटियों का विस्तृत ज्ञान इन्हें विरासत में मिला है।७ ये भोजन में मुख्यतः ज्वार, बाजरा, मक्का, चना, चावल लेते हैं। अनेक विशेष सा अवसरों पर महिलाओं को ''घुघरी शराब'' प्रदान की जाती है।

सहरियाओं के रिश्तेः-

सहरियाओं के समाज में रिश्ते-नातेदारी का बड़ा महत्व है। सहरियाओं के समाज में दो प्रकार से रिश्ते-नातेदारी होती है। विवाह के द्वारा रिश्ते-नातेदारी, इसमें विवाह होने पर लड़का-लड़की के परिवार वालों में और रिश्तेदारों में आपस में रिश्तेदारी हो जाती है। दूसरा सहरियाओं के समाज में रक्त सम्बन्धी रिश्ते-नाते होते हैं। रक्त सम्बन्धी रिश्ते-नातेदारी में भाई-भाई, माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-ताऊ, बुआ-भतीजा आदि सम्मिलित होते है।

स्त्रियों की स्थितिः-

सहरियाओं के समाज में पुरुष प्रधान समाज होते हुए भी स्त्रियों पर कोई अत्याचार नहीं किये जाते हैं। स्त्रियों को सामाजिक पंचायतों में भाग लेने का अधिकार नहीं होता है। इनमें ''घुंघट की प्रथा'' है। सहरिया समाज में स्त्रियाँ सामाजिक, मर्यादाआं का पालन करती हैं स्त्रियों को स्वेच्छा से अपना जीवन साथी चुनने की आजादी प्राप्त है। स्त्रियों को विधवा विवाह की भी सामाजिक मान्यता प्राप्त है।८

वस्तुतः भारत की जनजातियाँ अपने सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक विकास के सन्दर्भों में विभिन्न अवस्थाओं में है। कुछ जनजातियाँ हिन्दूकरण या इसाई धर्म स्वीकार कर या किसी अन्य राह द्वारा परिवर्तित हुई हैं। कुछ जनजातियाँ संक्रमण अवस्था में हैं तो कुछ बहुत हद तक अपनी परम्परात्मक जीवन प्रणाली को अपनाये हुए हैं। ऐसी स्थिति में जनजाति समाज में परिवर्तन वर्तमान सन्दर्भ में समसामयिक एवं प्रासंगिक विषय है। सभ्य समाज के व्यवहार प्रतिमान किस रुप में उनको प्रभावित कर रहे हैं उपर्युक्त अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य जनजातियों के परिवर्तित व्यवहार, क्रिया-कलाप, उनके सामाजिक सामंजस्य एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार होती है एवं उनके धर्म एवं संस्कृति पर उनके व्यवहार

एवं क्रिया कलाप पर पड़ने वाले प्रभावों का स्वरुप क्या है इसका अध्ययन करना है तथा जनजाति समाज की जीवन-शैली, खान-पान, रहन-सहन, उनके प्रभाव को सभ्य समाज के धरातल पर समाहित होते देखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Senses of India, 2001, Part special Tables shed, M.P.
2. उपाध्याय, प्रोफेसर विजय शंकर, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, मध्य प्रदेश।
3. मेहता प्रकाशन (१९९७): *भारत के आदिवासी,* उदयपुर: शिवा पब्लिशर्स।
4. त्रिवेदी, बी०एल०-जनजाति महिला विकास विशेषांक, *त्रैमासिक माणिक्य,* आदिय जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्था, उदयपुर।
5. तिवारी, शिवकुमार एवं श्री कमल शर्मा, *मध्यप्रदेश की जनजातीय व्यवस्था,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, १९९७.
6. श्रीवास्तव, डॉ० ए०आर०एन०, *जनजातीय भारत,* मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
7. Naik, T.B. (1984) *The Jahariy* , Ahamdabad Tribal Research and Training Institute Gujarat Vidyalaya Peeth.
8. जैन, श्रीचन्द (१९८०): *आदिवासियों के बीच,* दिल्ली, किताब घर ।

******